वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली बनाम आधुनिक शिक्षाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. श्वेता शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
मान्यवर कांशीराम राजकीय
महाविद्यालय, गाजियाबाद
ईमेलः historymkrgcgzb@gmail.com

सारांश

भारतीय शिक्षा परंपरा का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा का महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। इस प्रणाली का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नही था,बल्कि व्यक्ति के नैतिक,आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को भी समान महत्व दिया जाता था। गुरूकुल व्यवस्था के माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञान, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा दी जाती थी। दूसरी और आधुनिक शिक्षा प्रणाली औद्योगिक और तकनीकी युग की आवश्यताओं के अनुरूप विकसित हुई,जिसमे वैज्ञानिक ज्ञान,तकनीकी कौशल और व्यवसायिक दक्षता पर अधिक जोर दिया जाता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली शिक्षा को व्यापक और सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है,किंतु इसमे नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण की समस्या भी देखी जाती है। इसके विपरीत वैदिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों, अनुशासन और समग्र व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता थौ प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच प्रमुख अंतर और समानताओं का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक और तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से दोनों शिक्षा प्रणालियों के उद्देश्यों,संरचना,पद्धति और प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और वैज्ञानिक विकास की विशेषता है,जबकि वैदिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विशेष महत्व था ।

मुख्य शब्द

वैदिक शिक्षा, गुरूकुल प्रणाली,आधुनिक शिक्षा,भारतीय शिक्षा परंपरा,तुलनात्मक अध्ययन।

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 10-03-26
Approved: 23-03-26

डॉ. श्वेता शर्मा

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली बनाम आधुनिक शिक्षाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

RJPP Oct.25-Mar.26,
Vol. XXIV, No. I,
Article No. 25
Pg. 224-231

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-mar-2026-vol-xxiv-no1--270

https://doi.org/10.31995/rjpp.2026.v24i01.025

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता के विकास में शिक्षा प्रणाली की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नही है बल्कि यह सामाजिक,सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के सरंक्षण का माध्यम भी होती है। प्राचीन भारत में शिक्षा को जीवन का अभिन्न अगं माना जाता था और इसे व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व निर्माण से जोड़ा गया था। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में नैतिकता,अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास किया जाता था। इस दृष्टि से वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।(1)

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली का आधार आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नही बल्कि व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करना भी था। विद्यार्थियों को सत्य,अहिंसा,संयम,अनुशासन और सेवा जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को समाज के प्रति अपनें कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाया जाता था।इस प्रकार वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली को एक आदर्श नागरिक के रूप में विकसित करने का प्रयास करती थी।(2)

प्राचीन भारत में गुरूकुल प्रणाली शिक्षा का प्रमुख माध्यम थी।गुरूकुल में विद्यार्थी गुरू के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे और गुरू के मार्गदर्शन में विभिन्न विषयों का अध्ययन करते थे। इस व्यवस्था में विद्यार्थी और गुरू के बीच प्रत्यक्ष संवाद और अनुभव के माध्यम से ज्ञान का आदान–प्रदान होता था। शिक्षा का वातावरण प्राकृतिक और अनुशासित होता था,जिससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता और आत्मसंयम का विकास होता था।(3)

गुरूकुल प्रणाली में गुरू और शिष्य के बीच अत्यंत घनिष्ठ और आध्यात्मिक संबंध होता था। गुरू विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही नहीं देते थे बल्कि उनके जीवन के मार्गदर्शक भी होते थे। वे वद्यार्थियों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर विशेष ध्यान देते थे। इस प्रकार शिक्षा प्रक्रिया में व्यक्तिगत मार्गदर्शन और अनुशासन का अत्यधिक महत्व था,जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है।(4)

वैदिक कालीन शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक और बहुआयामी था। इसमे वेद उपनिषद,दर्शन,व्याकरण,गणित,खगोलशास्त्र और आयुर्वेद जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाता था। इसके साथ ही विद्यार्थियों को सामाजिक जीवन के सिद्धांत,नैतिक आचरण और आध्यात्मिक ज्ञान की भी शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार वैदिक शिक्षा प्रणाली ज्ञान और मूल्य दोनों का समन्वय प्रस्तुत करती थी।(5)

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में शिक्षा को एक समग्र प्रक्रिया माना जाता था, जिसम बौद्धिक,शारीरिक और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व दिया जाता था। विद्यार्थियों को योग,ध्यान,शारीरिक व्यायाम और आत्माअनुशासन का अभ्यास कराया जाता था। इससे उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास होता था। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नही बल्कि जीवन को सही दिशा देना भी था।(6)

इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक और औद्योगिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी

कौशल प्रदान करना है। यह प्रणाली औपचारिक संस्थानों के माध्यम से संचालित होती है और इसमे शिक्षा को व्यवस्थित पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली के माध्यम से प्रदान किया जाता है।(7)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यालय,महाविद्यालय और विश्वविद्यालय जैसे संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन संस्थानों के माध्यम से विभिन्न विषयों का अध्ययन कराया जाता है और विद्यार्थियों का मूल्यांकन लिखित परिक्षाओं केमाध्यम से किया जाता है। इससे शिक्षा की एक संगठित और संरचित प्रणाली विकसित हुई है,जो आधुनिक समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती है।(8)

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख उद्देश्य आर्थिक और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देना है। इस प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों को विज्ञान,प्रौद्योगिक,चिकित्सा,प्रबंधन और अन्य व्यावसायिक क्षेत्रो में प्रशिक्षण दिया जात है। इससे विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्त करने और समाज के आर्थिक विकास में योगदान देने का अवसर मिलता है।(9)

हालांकिआधुनिक शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान के प्रसार और वैज्ञानिक प्रगति कें महत्वपूर्ण योगदान दिया है,फिर भी इसमें कुछ सीमाएँ भी दिखाई देती है।कई बार यह देखा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना बन जाता है।इसके कारण नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास अपेक्षाकृत कम हो जाता है।(10)

वैदिक शिक्षा प्रणाली में जहां आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता था,वहीं आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को महत्व दिया जाता है। दोनों प्रणालियों के उद्देश्य, पद्धतियों और संरचनाओं में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। इसलिए इन दोनों प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।(11)

समकालीन समय में शिक्षा प्रणाली में कई प्रकार के परिवर्तन हुए है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सूचना क्रांति ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण और तकनीकी उपकरणों के उपयोग ने शिक्षा को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाया है।(12) इसके बावजूद यह आवश्यक है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी शामिल किया जाए। यदि शिक्षा केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित रह जाए तो व्यक्ति का समग्र विकास सभंव नही हो सकता। इसलिए शिक्षा में मानवीय मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी महत्व देना आवश्यक है।(13) इस प्रकार वैदिक शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली दोनों का अध्ययन भारतीय शिक्षा परंपरा को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन शिक्षा के ऐतिहासिक विकास और वर्तमान स्वरूप के बीच सबंध को स्पष्ट करता है। साथ ही यह भी दर्शाता है कि भविष्य की शिक्षा प्रणाली को अधिक संतुलित और प्रभावी बनाने के लिए दोनों प्रणालियों के सकारात्मक तत्वों का समन्वय आवश्यक है।(14)

कार्यविधि

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि इन दोनों शिक्षा प्रणालियों की सरंचना, उद्देश्य, पद्धति और प्रभावों में क्या अंतर है तथा ये प्रणालियाँ व्यक्ति और समाज के विकास को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। साथ ही यह भी

विश्लेषण किया गया है कि शिक्षा के माध्यम से समाज ने नैतिक,बौद्धिक और आर्थिक विकास किस प्रकार संभव होता है। इस प्रकार यह शोध शिक्षा के ऐतिहासिक विकास और वर्तमान स्वरूप को समझने का प्रयास करता है।(1)

इस अध्ययन में ऐतिहासिक और तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली के अध्ययन के लिए प्रचीन ग्रंथो, ऐतिहासिक अभिलेखों और वैदिक साहित्य का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ और स्मृतियों में वर्णित शिक्षा संबंधी विचारों का भी अध्ययन किया गया है। वही आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अध्ययन के लिए समकालीन शिक्षा नीतियों, सरकारी रिपोर्टो और विभिन शोध लेखों का उपयोग किया गया है, जिससे शिक्षा प्रणाली के वर्तमान स्वरूप को समझा जा सके।(2)

इस शोध में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्त्रोतों मे वैदिक साहित्य,उपनिषद,स्मृतियाँ और प्राचीन भारतीय ग्रन्थ शामिल है, जिनमें शिक्षा से संबंधित विचारों का उल्लेख मिलता है। द्वितीयक स्त्रोतों में विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें, शोध लेख और शिक्षा संबंधी आधुनिक अध्ययन शामिल किए गए है। इन स्त्रोतों के माध्यम से वैदिक और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के सिद्धातों और व्यवहारिक स्वरूप का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।(3)

इस शोधपत्र की पहली परिकल्पना यह है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर आधारित था। इस प्रणाली में शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं बल्कि जीवन के आदर्श मूल्यों को आत्मसात करने का माध्यम माना जाता था। विद्यार्थियों को सत्य, अनुशासन, संयम और सेवा जैसे नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। इस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य आदर्श और जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करना था।(4)

दूसरी परिकल्पना यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी कौशल का विकास करना है। यह प्रणाली विद्यार्थियों को आधुनिक समाज की आर्थिक, तकनीकी और व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करती है। आधुनिक शिक्षा में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और प्रबंधन जैसे विषयों को विशेष महत्व दिया जाता है। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा प्रणाली समाज के आर्थिक और औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।(5)

तीसरी परिकल्पना यह है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु–शिष्य संबंध को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। गुरु केवल शिक्षक ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों के जीवन के मार्गदर्शक भी होते थे। इस संबंध के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नैतिक शिक्षा और जीवन मूल्यों का ज्ञान प्राप्त होता था। इस प्रकार शिक्षा प्रक्रिया अधिक मानवीय और व्यक्तिगत स्वरूप की होती थी।(6)

चौथी परिकल्पना यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा अधिक औपचारिक और संस्थागत स्वरूप में प्रदान की जाती है। इसमें विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय जैसे संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध अपेक्षाकृत औपचारिक होते हैं तथा शिक्षा का संचालन निर्धारित पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली के माध्यम से किया जाता है।(7)

पाँचवीं परिकल्पना यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने शिक्षा को अधिक व्यापक और

सुलभ बनाया है। प्राचीन काल में शिक्षा सीमित वर्गों तक ही उपलब्ध थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा का प्रसार हुआ है और समाज में जागरूकता और प्रगति को बढ़ावा मिला है।(8)

छठी परिकल्पना यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने शिक्षा को अधिक व्यापक और सुलभ बनाया है। प्राचीन काल में शिक्षा सीमित वर्गों तक ही उपलब्ध थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा का प्रसार हुआ है और समाज में जागरूकता और प्रगति को बढ़ावा मिला है।(9)

सातवीं परिकल्पना यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की अपेक्षाकृत कमी देखी जाती है। आधुनिक शिक्षा में अधिकतर ध्यान तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण पर केंद्रित रहता है। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा का उद्देश्य कई बार केवल रोजगार प्राप्त करना बन जाता है और नैतिक मूल्यों का विकास अपेक्षाकृत कम होता है।(10)

आठवीं परिकल्पना यह है कि दोनों शिक्षा प्रणालियों की अपनी–अपनी विशेषताएँ और सीमाएँ हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक और तकनीकी विकास पर आधारित है। दोनों प्रणालियाँ अपने–अपने समय और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार विकसित हुई हैं।(11)

नौवीं परिकल्पना यह है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा प्रणाली के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को शामिल किया जा सकता है। इससे शिक्षा अधिक संतुलित और प्रभावी बन सकती है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा प्रणाली में पारंपरिक और आधुनिक दोनों दृष्टिकोणों का समन्वय आवश्यक है।(12)

दसवीं परिकल्पना यह भी है कि शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन समाज के विकास और आवश्यकाताओं के अनुसार होता है। वैदिक काल में शिक्षा का स्वरूप उस समय की सामाजिक और धार्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप था, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली औद्योगिक और वैज्ञानिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित हुई है। इसलिए शिक्षा के स्वरूप को समय के अनुसार समझना आवश्यक है।(13)

ग्यारहवीं परिकल्पना यह है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि समाज में नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और मानवता की भावना का विकास करना भी होना चाहिए। यदि शिक्षा प्रणाल इन मूल्यों को विकसित करने में सक्षम हो तो समाज अधिक संतुलित और प्रगतिशाील बन सकता है।(14)

इन सभी परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिए विभिन्न ऐतिहासिक और आधुनिक स्त्रोतों का विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के विकास में वैदिक और आधुनिक दोनों प्रणालियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसलिए शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने के लिए दोनों प्रणालियों की सकारात्मक विशेषताओं का समन्वय करना आवश्यक है।(15)

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर आधारित थी। इस प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नहीं

बल्कि व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना था। गुरुकुल व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासन, आत्मसंयम, सत्य और सेवा जैसे मूल्यों का अभ्यास कराया जाता था। इस प्रकार वैदिक शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को एक आदर्श नागरिक और जिम्मेदार सामाजिक सदस्य के रूप में विकसित करने का प्रयास करती थी।

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का वातावरण प्राकृतिक और अनुशासित होता था। विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे और दैनिक जीवन की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। इससे उनमें आत्मनिर्भरता, श्रम की महत्ता और सामाजिक सहयोग की भावना विकसित होती थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं बल्कि जीवन की वास्तविक समस्याओं का सामना करने की क्षमता विकसित करना भी था।

इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के विकास पर आध ाारित है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक समाज की आर्थिक, तकनीकी और व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना है। विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का व्यवस्थित ज्ञान प्रदान किया जाता है। इस प्रणाली ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति को संभव बनाया है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसने शिक्षा को व्यापक और सुलभ बनाया है। प्राचीन काल में शिक्षा सीमित वर्गों तक ही उपलब्ध थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है। सरकारी नीतियों और शिक्षा सुधारों के कारण शिक्षा का प्रसार बढ़ा है और समाज में जागरूकता तथा विकास को बढ़ावा मिला है।

हालांकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कई सकारात्मक पहलू हैं, फिर भी इसमें कुछ सीमाएँ भी दिखाई देती हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य कई बार केवल रोजगार प्राप्त करना बन जाता है। इसके परिणामस्वरूप नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा होने लगती हैं। इससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।

वैदिक शिक्षा प्रणाली में जहाँ आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता था, वहीं आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को प्राथमिकता दी जाती है। दोनों प्रणालियों के उद्देश्यों और पद्धतियों में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

तालिकाः वैदिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा की तुलना

आधार	वैदिक शिक्षा प्रणाली	आधुनिक शिक्षा प्रणाली
उद्देश्य	नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास	वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक
स्थान	गुरुकुल	विद्यालय/विश्वविद्यालय
संबंध	गुरु–शिष्य	शिक्षक–विद्यार्थी
पद्धति	मौखिक एवं व्यवहारिक	लिखित एवं औपचारिक
मूल्य	नैतिकता, अनुशासन, सेवा	कौशल, विज्ञान, तकनीक

ग्राफः शिक्षा के उद्देश्य का तुलनात्मक दृष्टिकोण

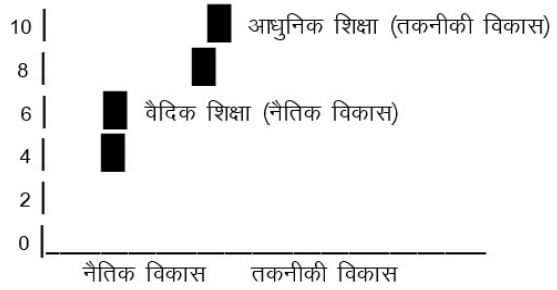

यह ग्राफ दर्शाता है कि वैदिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक विकास को अधिक महत्व दिया जाता था, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और वैज्ञानिक विकास को अधिक प्राथमिकता दी जाती है। दोनों प्रणालियों के उद्देश्यों में अंतर होने के बावजूद उनका समन्वय शिक्षा को अधिक प्रभावी बना सकता है।

चर्चा एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर आधारित थी। इसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास करना भी था। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मसंयम, सत्य एवं सेवा जैसे गुणों का विकास किया जाता था, जिससे वे एक आदर्श नागरिक के रूप में समाज में योगदान देने योग्य बनते थे।

इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक समाज की आर्थिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना है। विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के माध्यम से संरचित पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रणाली ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति को संभव बनाया है तथा शिक्षा को अधिक व्यापक और सुलभ बनाया है।

हालांकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अनेक सकारात्मक पक्ष हैं, फिर भी इसमें कुछ सीमाएँ भी विद्यमान हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य कई बार केवल रोजगार प्राप्त करना बन जाता है, जिसके कारण नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा होने लगती है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। इसके विपरीत वैदिक शिक्षा प्रणाली में चरित्र निर्माण और नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती थी।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों शिक्षा प्रणालियों की अपनी–अपनी विशेषताएँ और सीमाएँ हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली जहाँ नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल देती है, वहीं आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक एवं तकनीकी उन्नति को प्रोत्साहित करती है। इसलिए यह आवश्यक है कि दोनों प्रणालियों के सकारात्मक पहलुओं का समन्वय किया जाए, जिससे एक संतुलित एवं प्रभावी शिक्षा प्रणाली विकसित हो सके।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा के नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को सम्मिलित करना अत्यंत आवश्यक है। इससे शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास तक सीमित न रहकर सामाजिक एवं नैतिक विकास को भी सुनिश्चित कर सकेगा। इस प्रकार एक समन्वित शिक्षा प्रणाली समाज के समग्र एवं सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

संदर्भ

1. अग्रवाल, जे. सी. (2018). भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास (Development of Education System in India). नई दिल्लीः शिक्षा पब्लिकेशन्स।
2. अल्तेकर, ए. एस. (2011). प्राचीन भारत में शिक्षा (Education in Ancient India). दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
3. भाटिया, के. के., एवं भाटिया, बी. डी. (2016). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार (The Philosophical and Sociological Foundations of Education). नई दिल्लीः दोआबा हाउस।
4. दास, एस. के. (2019). भारतीय शिक्षा का इतिहास (History of Indian Education). नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (National Education Policy 2020). नई दिल्लीः शिक्षा मंत्रालय।
6. कुमार, कृष्ण (2018). शिक्षा, संघर्ष और शांति (Education, Conflict and Peace). नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. मुखर्जी, राधा कुमुद (2015). प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली (Ancient Indian Education System). नई दिल्लीः आर्यन बुक्स इंटरनेशनल।
8. नंदा, बी. आर. (2014). भारतीय शिक्षा और उसका ऐतिहासिक विकास (Indian Education and Its Historical Development). नई दिल्लीः अनमोल पब्लिकेशन्स।
9. पांडेय, आर. एस. (2021). ''भारत में प्राचीन और आधुनिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन'' (Comparative Study of Ancient and Modern Education in India). जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 12(2), 55–68।
10. राव, एस. वी. सुब्रमण्यम (2019). भारतीय शिक्षा का दर्शन (Philosophy of Indian Education). नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर्स।
11. शर्मा, आर. एस. (2013). प्राचीन भारत (Ancient India). नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. सिंह, योगेंद्र (2017). भारतीय शिक्षा और संस्कृति (Indian Education and Culture). नई दिल्लीः सेज पब्लिकेशन्स।
13. श्रीवास्तव, जी. (2019). भारतीय शिक्षाः अतीत, वर्तमान और भविष्य (Indian Education: Past, Present and Future). नई दिल्लीः कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
14. तिलक, जे. बी. जी. (2018). भारत में शिक्षा और विकास (Education and Development in India). नई दिल्लीः पालग्रेव मैकमिलन।